The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

वित्तीय साक्षरता और MSMEs की उद्यमशील सफलता का अध्ययन

डॉ० संतोष रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, बुंदेलखंड कालेज, झांसी,उ०प्र०

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22096825

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 22-06-2026

Accepted: 29-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

वित्तीय साक्षरता, सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्यम, आर्थिक विकास, निर्यात संवर्धन

ABSTRACT

भारत की अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये रोजगार सृजन, नवाचार, निर्यात वृद्धि तथा क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं डिजिटल आर्थिक परिवेश में MSMEs की सफलता केवल उत्पादन एवं विपणन तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वित्तीय प्रबंधन क्षमता भी उनकी स्थिरता और विकास का प्रमुख आधार बन चुकी है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वित्तीय साक्षरता और MSMEs की उद्यमशील सफलता के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। वित्तीय साक्षरता से आशय उद्यमियों की उन क्षमताओं से है जिनके माध्यम से वे बजट निर्माण, निवेश, ऋण प्रबंधन, कराधान, बचत, नकदी प्रवाह प्रबंधन तथा डिजिटल वित्तीय सेवाओं का प्रभावी उपयोग कर सकें। अध्ययन में यह पाया गया कि जिन MSME उद्यमियों में वित्तीय ज्ञान एवं जागरूकता अधिक होती है, वे व्यवसायिक जोखिमों का बेहतर प्रबंधन कर पाते हैं तथा वित्तीय निर्णय अधिक प्रभावी ढंग से लेते हैं। इससे उनकी लाभप्रदता, व्यवसायिक स्थिरता एवं प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में वृद्धि होती है। शोध में द्वितीयक आँकड़ों एवं विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, शोध पत्रों तथा RBI एवं MSME मंत्रालय के प्रकाशनों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि वित्तीय साक्षरता की कमी के कारण अनेक MSMEs उचित वित्तीय योजनाओं का लाभ

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

नहीं उठा पाते तथा ऋण प्रबंधन संबंधी समस्याओं का सामना करते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि यदि MSME उद्यमियों को वित्तीय शिक्षा, डिजिटल बैंकिंग प्रशिक्षण तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रभावी रूप से प्रदान की जाए, तो उनकी उद्यमशील सफलता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। अतः सरकार, वित्तीय संस्थानों एवं शैक्षणिक संगठनों को संयुक्त रूप से वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे MSME क्षेत्र को अधिक सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

प्रस्तावना

भारत की अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs) का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। MSME क्षेत्र रोजगार सृजन, उत्पादन वृद्धि, निर्यात संवर्धन तथा क्षेत्रीय संतुलित विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है। भारत सरकार के अनुसार MSMEs देश की GDP में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं तथा करोड़ों लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी युग में MSMEs की सफलता केवल उत्पादन क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि वित्तीय प्रबंधन की दक्षता भी अत्यंत आवश्यक हो गई है।

वित्तीय साक्षरता (Financial Literacy) का अर्थ है वित्तीय विषयों जैसे बचत, निवेश, ऋण प्रबंधन, बजट निर्माण, कराधान तथा डिजिटल भुगतान प्रणाली की जानकारी एवं समझ। किसी भी उद्यमी के लिए वित्तीय साक्षरता व्यवसाय के उचित संचालन और दीर्घकालीन सफलता का आधार होती है। जिन उद्यमियों में वित्तीय ज्ञान की कमी होती है, वे व्यवसायिक निर्णय लेने में कठिनाइयों का सामना करते हैं, जिसके कारण उनके उद्यम की विकास दर प्रभावित होती है।

आज डिजिटल बैंकिंग, UPI, ऑनलाइन ऋण प्रणाली तथा ई-कॉमर्स के बढ़ते प्रभाव ने MSMEs के लिए नए अवसर उत्पन्न किए हैं। हालांकि, वित्तीय साक्षरता की कमी के कारण अनेक छोटे उद्यमी इन सुविधाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते। इसलिए MSMEs की उद्यमशील सफलता में वित्तीय साक्षरता की भूमिका का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है।

अध्ययन के उद्देश्य

- वित्तीय साक्षरता की अवधारणा को समझना।
- MSMEs की उद्यमशील सफलता में वित्तीय साक्षरता की भूमिका का अध्ययन करना।

- MSME उद्यमियों के समक्ष वित्तीय प्रबंधन संबंधी समस्याओं का विश्लेषण करना।
- MSMEs के विकास हेतु वित्तीय साक्षरता बढ़ाने के उपाय सुझाना।

वित्तीय साक्षरता की अवधारणा

वित्तीय साक्षरता वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति वित्तीय निर्णयों को समझदारी से लेने में सक्षम होता है। इसमें मुख्य तत्व निम्न हैं—बजट निर्माण, बचत एवं निवेश, ऋण प्रबंधन, कर योजना, बीमा एवं जोखिम प्रबंधन, डिजिटल बैंकिंग, नकदी प्रवाह प्रबंधन

वित्तीय साक्षरता उद्यमियों को सीमित संसाधनों का प्रभावी उपयोग करने में सहायता प्रदान करती है। यह व्यवसायिक जोखिम को कम करती है तथा दीर्घकालीन लाभप्रदता को बढ़ाती है।

MSMEs की अवधारणा एवं महत्व

MSME का पूर्ण रूप Micro, Small and Medium Enterprises (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) है। भारत में MSME क्षेत्र आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। MSMEs ऐसे उद्यम हैं जो विनिर्माण (Manufacturing), सेवा (Services) तथा व्यापार (Trading) गतिविधियों में संलग्न होते हैं और जिनका निवेश एवं वार्षिक कारोबार निर्धारित सीमा के अंतर्गत आता है।

भारत सरकार ने MSME विकास अधिनियम, 2006 तथा बाद में संशोधित मानदंडों के अनुसार MSMEs को निवेश एवं वार्षिक टर्नओवर के आधार पर वर्गीकृत किया है।

श्रेणी।	निवेश सीमा	वार्षिक टर्नओवर
सूक्ष्म उद्यम (Micro Enterprise)	₹2.5 करोड़ तक	₹10 करोड़ तक
लघु उद्यम (Small Enterprise)	₹25 करोड़ तक	₹100 करोड़ तक
मध्यम उद्यम (Medium Enterprise)	₹125 करोड़ तक	₹500 करोड़ तक

MSMEs का महत्व

1. रोजगार सृजन : MSME क्षेत्र कृषि के बाद भारत में सबसे अधिक रोजगार उपलब्ध कराने वाला क्षेत्र है। यह ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

2. आर्थिक विकास में योगदान : MSMEs देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP), औद्योगिक उत्पादन तथा राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह आर्थिक विकास की गति को बढ़ाने में सहायक हैं।

3. निर्यात संवर्धन: हस्तशिल्प, वस्त्र, चमड़ा, इंजीनियरिंग वस्तुएँ तथा खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में MSMEs भारतीय निर्यात को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. क्षेत्रीय संतुलित विकास: MSMEs छोटे शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किए जा सकते हैं, जिससे क्षेत्रीय असमानता कम होती है और स्थानीय विकास को बढ़ावा मिलता है।

5. उद्यमिता का विकास: यह क्षेत्र नए उद्यमियों को कम पूंजी में व्यवसाय प्रारंभ करने का अवसर प्रदान करता है तथा नवाचार और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करता है।

6. गरीबी उन्मूलन में सहायता: रोजगार और आय के अवसर बढ़ने से गरीबी कम होती है तथा लोगों का जीवन स्तर सुधरता है।

7. महिलाओं एवं कमजोर वर्गों का सशक्तिकरण: MSMEs महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करते हैं।

8. स्थानीय संसाधनों का उपयोग: MSMEs स्थानीय कच्चे माल, कौशल एवं श्रम का उपयोग करके उत्पादन करते हैं, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव होता है।

9. नवाचार और तकनीकी विकास: MSMEs नए उत्पादों, सेवाओं और तकनीकों को अपनाकर औद्योगिक विकास को गति देते हैं।

10. आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान: MSMEs "आत्मनिर्भर भारत" अभियान के प्रमुख स्तंभ हैं। ये घरेलू उत्पादन को बढ़ाकर आयात पर निर्भरता कम करते हैं और देश की आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूत बनाते हैं।

MSMEs की उद्यमशील सफलता में वित्तीय साक्षरता की भूमिका

1. प्रभावी वित्तीय निर्णय: वित्तीय साक्षर उद्यमी लागत, लाभ, निवेश एवं ऋण संबंधी निर्णय अधिक कुशलता से लेते हैं। इससे व्यवसायिक जोखिम कम होता है।

2. नकदी प्रवाह प्रबंधन: Cash Flow Management किसी भी व्यवसाय की सफलता के लिए आवश्यक है। वित्तीय साक्षरता उद्यमियों को आय एवं व्यय का संतुलन बनाए रखने में सहायता करती है।

3. ऋण प्रबंधन: MSME उद्यमियों को व्यवसाय विस्तार हेतु ऋण की आवश्यकता होती है। वित्तीय ज्ञान होने पर वे उचित ब्याज दर एवं ऋण योजनाओं का चयन कर सकते हैं।

4. डिजिटल वित्तीय सेवाओं का उपयोग: आज UPI, इंटरनेट बैंकिंग एवं डिजिटल भुगतान व्यवसाय का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। वित्तीय साक्षरता इन तकनीकों के प्रभावी उपयोग में सहायक होती है।

5. जोखिम प्रबंधन: बीमा, बचत एवं निवेश संबंधी जानकारी व्यवसायिक संकटों से सुरक्षा प्रदान करती है।

6. लाभप्रदता में वृद्धि: वित्तीय प्रबंधन की उचित समझ से लागत नियंत्रण एवं लाभ वृद्धि संभव होती है।

MSMEs के समक्ष वित्तीय समस्याएँ

1. वित्तीय ज्ञान का अभाव: अनेक छोटे उद्यमियों को बैंकिंग, निवेश एवं कराधान की पर्याप्त जानकारी नहीं होती।

2. ऋण प्राप्ति में कठिनाई: दस्तावेजों की कमी एवं कमजोर वित्तीय रिकॉर्ड के कारण MSMEs को ऋण प्राप्त करने में समस्याएँ होती हैं।

3. नकदी संकट: Cash Flow की समस्याओं के कारण कई छोटे उद्योग समय पर भुगतान नहीं कर पाते।

4. डिजिटल तकनीक का सीमित उपयोग: ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी व्यवसायिक विकास में बाधा बनती है।

5. सरकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव: कई उद्यमी प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, CGTMSE तथा स्टार्टअप योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाते।

भारत सरकार द्वारा MSMEs हेतु वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम

भारत सरकार एवं भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा MSMEs की वित्तीय जागरूकता बढ़ाने हेतु विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

1. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY): यह योजना छोटे उद्यमियों को बिना गारंटी ऋण उपलब्ध कराती है।

2. स्टैंड अप इंडिया योजना: महिला एवं अनुसूचित जाति/जनजाति उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

3. डिजिटल इंडिया अभियान: डिजिटल भुगतान एवं ऑनलाइन बैंकिंग को बढ़ावा देता है।

4. RBI वित्तीय साक्षरता केंद्र: भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में वित्तीय जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

5. उद्यम पंजीकरण पोर्टल: MSMEs को ऑनलाइन पंजीकरण एवं सरकारी सुविधाओं तक पहुँच प्रदान करता है।

अध्ययन की शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, RBI रिपोर्ट, MSME मंत्रालय के प्रकाशनों तथा इंटरनेट स्रोतों का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वित्तीय साक्षरता MSMEs की उद्यमशील सफलता का महत्वपूर्ण आधार है। जिन उद्यमियों में वित्तीय ज्ञान अधिक होता है, वे व्यवसायिक संसाधनों का बेहतर उपयोग करते हैं तथा जोखिमों का प्रभावी प्रबंधन कर पाते हैं। वित्तीय साक्षरता व्यवसाय की लाभप्रदता, स्थिरता एवं प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को बढ़ाने में सहायक है।

भारत में MSMEs के समक्ष वित्तीय जागरूकता की कमी, ऋण संबंधी कठिनाइयाँ एवं डिजिटल तकनीक के सीमित उपयोग जैसी समस्याएँ मौजूद हैं। यदि सरकार एवं वित्तीय संस्थाएँ MSME उद्यमियों को प्रशिक्षण, वित्तीय शिक्षा तथा डिजिटल बैंकिंग संबंधी जानकारी प्रदान करें, तो यह क्षेत्र अधिक सशक्त बन सकता है।

अतः MSMEs के सतत विकास एवं आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

सुझाव

- MSME उद्यमियों हेतु नियमित वित्तीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल वित्तीय शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
- बैंकिंग प्रक्रियाओं को सरल बनाया जाए।
- सरकारी योजनाओं की जानकारी स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराई जाए।
- महिला उद्यमियों के लिए विशेष वित्तीय साक्षरता अभियान चलाए जाएँ।

संदर्भ सूची:

Reserve Bank of India. (2024). *Financial Literacy and Inclusion Report*. Mumbai: RBI Publications.

Ministry of MSME. (2024). *Annual Report 2023-24*. Government of India.

Sharma, R. & Gupta, S. (2022). *Financial Literacy and Small Business Performance in India*. Journal of Entrepreneurship Development, 15(2), 45-58.

OECD. (2021). *Financial Literacy Framework for SMEs*. Paris: OECD Publishing.

Kumar, A. (2023). *Role of Financial Knowledge in MSME Growth*. International Journal of Management Studies, 10(4), 120-128.

Government of India. (2023). *Digital India and MSME Development Report*. New Delhi.

Mishra, P. (2021). *Entrepreneurship and Financial Management*. New Delhi: S. Chand Publications.

RBI Financial Education Booklet. (2023). Mumbai: Reserve Bank of India